क्रांतिकारियों के प्रेरक : भाई परमानन्द

शब्दार्थ : –

जिज्ञासा	–	जानने की इच्छा , उत्सुकता
तंग	–	संकीर्ण
प्रकट	–	प्रत्यक्ष
निष्कलंक	–	बेदाग , शुद्ध
निरोग	–	जिसे कोई रोग न हो , स्वस्थ
खड़ाऊँ	–	लकड़ी से बनी चप्पल

क) भाई परमानन्द ने भगतसिंह को इसलिए बुलाया था, क्यूँकि भगतसिंह के पिता किशनसिंह जी ने शिकायत की थी और कहा था कि और भगतसिंह को समझने था |

ख) भाई परमानन्द ने भगतसिंह को समझाया कि – " जिस मार्ग पर चलने का निश्चय करो , उससे कभी पीछे न हटो | भय , लोभ या दुर्बलता को हम अपने मार्ग में बाधा न बनने दें | ऐसी बाधाएँ प्रायः आया करती हैं | हममें इन्हें हटाने का साहस होना चाहिए | यदि इस मार्ग पर चलते हुए व्यक्ति एक बार घबरा जाए या फिसल जाए तो सँभलना कठिन हो जाता है | कई बार नासमझी और अज्ञानतावश अपनों की ओर से बाधाएँ डाल दी जाती हैं | अपने सिद्धान्तों पर चट्टान के समान अडिग रहना चाहिए | "

ग) करतार सिंह के सामने भारत–माता को स्वतंत्र कराने का ध्येय था | अमेरिका में उन्होंने विमान –विज्ञान सीखा |

घ) गुरु गोविंद सिंह जी पुराणों और संस्कृत–साहित्य के बड़े भक्त थे | उन्होंने आनंदपुर में एक प्रकार का यज्ञ रचाया और खालसा युद्ध सेनानियों का दाल खड़ा करने के लिए भवानी को भेंट करने के लिए एकत्रित जनसमूह से शीश माँगे | पाँच वीरों ने अपने प्राण प्रस्तुत किए | उन्हें पाँच प्यारे कहा गया | इस प्रकार गुरु गोविंद सिंह जी ने स्वदेश ,स्वधर्म को स्वतंत्र करने का प्रण किया | इसी का यह परिणाम था कि भारत पर विदेशी आक्रमणों की जो नदी उत्तर –पश्चिम की खैबर घाटी से नीचे पंजाब की और सदियों से बहती चली आ रही थी , उसे उल्टा बहकर ऊपर उत्तर – पश्चिम अर्थात अफ़ग़ानिस्तान की ओर गए | हरसिंह नलवा ने काबुल पर आक्रमण करके इस चमत्कार को सच कर दिखाया |

ड) भगतसिंह जी ने पहले भाई परमानन्द छिब्बर के पैर छुए , फिर चारपाई के नीचे पड़ी उनकी लकड़ी की खड़ाऊँ की मिट्टी लेकर माथे पर लगाई और धीरे – धीरे पीछे की ओर सरकता गया | उसने अपने गुरु की ओर पीठ न होने दी थी |

च) भाई परमानन्द का जन्म 4 नवंबर , 1876 को करियाला के मोहवाल ब्राह्मण परिवार में हुआ था |

छ) भाई परमानन्द ने अंग्रेज़ सरकार के विरुद्ध संघर्ष किया | लाहौर षड़यंत्र केस में उन्हें बंदी बनाकर फाँसी की सज़ा सुनाई गई | इसे बाद में काले पानी की सज़ा में

बदलकर उन्हें अंडमान की काल कोठरी में बंद कर दिया गया | वे पाँच वर्ष तक वहाँ यातनामय जीवन जीते रहे |

ज) भाई परमानन्द के जेल चले जाने के बाद उनकी पत्नी भाग्यसुधि ने अपार कष्ट सहे | उन्होंने अपनी चार नन्ही पुत्रियों का पालन – पोषण किया | उनकी दो पुत्रियाँ बीमार हो गई | धन की कमी के कारण उनका उपचार न हो सका और वे स्वर्ग सिधार गई | भाग्यसुधि ने पंद्रह रुपये मासिक की शिक्षिका की नौकरी कर ली | क्रांतिकारी की पत्नी होने के कारण परिचित उनकी सहायता करने से घबराते थे | अंग्रेज़ों ने उनके मकान को तोड़कर उसे जला दिया था | फिर भी वीरांगना भाग्यसुधि ने साहस नहीं छोड़ा |

10) 15 अगस्त सन 1947 को देश का विभाजन हो गया | क्रांतिकारियों के पथ – प्रदर्शक भाई परमानन्द देश के विभाजन का यह आघात न सह सके | उनका निधन 8 दिसंबर ,1947 को हो गया | उनके महान कार्यों और विनम्र स्वभाव के कारण सभी उन्हें " देवतास्वरूप " कहते थे |